श्री विमलकुमार मन्नालालजी चौरड़िया : क्या श्रीमान यह बतलायेंगे कि यह जांच कब से चल रही है और कब तक पूरी होने की संभावना है । जांच के दौरान में ही उनके द्वारा कोई देशद्रोही की कार्यवाही न की जाय, इसको रोकने के लिये क्या प्रबन्ध किये जा रहे हैं ?

श्री जवाहरलाल नेहरू मैं नहीं कहता कि कब से जांच हो रही है लेकिन कुछ न कुछ खबर हमारे पास आती रहती है । जहां तक उनकी खराब कार्यवाहियों को रोकने का सवाल है तो जाहिरा काम हैं उनको रोका जाता है लेकिन कई काम पर्दे के पीछे होते हैं जिनको रोकना दुश्वार है ।

श्री विमलकुमार मन्नालालजी चौरड़िया : जांच कब से हो रही है ?

श्री जवाहरलाल नेहरू : तारीख नहीं बतला सकता हूं लेकिन इत्तिला हमारे पास आती रहती है ।

FILM ON FREEDOM MOVEMENT IN INDIA

*128. SHRI KRISHAN DUTT: Will the Minister of INFORMATION AND BROADCASTING be pleased to state:

(a) whether it is a fact that a film is being produced in Madras on the freedom movement in India.

(b) if so, whether the producer sought any assistance from Government; and

(c) what are the precautions which Government have taken or propose to take to ensure that the final production depicts an authentic account of the Indian freedom struggle?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF INFORMATION AND BROADCASTING (SHRI SHAM NATH) (a) Government have no information.

(b) No such request for assistance has been received by Government from any producer.

(c) Does not arise.

NATIONALISATION OF SHOPS IN BURMA

*129. { SHRI J. S. PILLAI†:
SHRI J. H. JOSHI:

Will the PRIME MINISTER be pleased to state:

(a) the number of Indians affected by the nationalisation of shops in Burma; and

(b) the amount of money lost by the Indians by the nationalisation; and

(c) whether the nationalisation has taken place with or without compensation?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF EXTERNAL AFFAIRS (SHRI DINESH SINGH): (a) to (c) A statement is placed on the Table of the House.

STATEMENT

Recent reports about the situation of Indians in Burma have caused some concern in India. The facts of the situation are set out below.

The present Revolutionary Government of Burma are committed to socialism, and have been taking various measures in furtherance of this objective. Banks, Import and Export trade and other fields of economic activity have been nationalized. The latest measures, undertaken during the last one month, were the nationalisation of large numbers of shops. Of these, about three thousand are believed to be those of Indians. About 50,000 Indians have been affected by the nationalisation of these shops, which are estimated to have assets totalling about Rs. 6 crores. The Government of Burma have promised compensation for the nationalised shops.

†The question was actually asked on the floor of the House by Shri J. S. Pillai.

As a result of these meausres, as well as difficulties in travelling to India and in remitting funds into India, many Indians have decided to come away from Burma. About twenty-five thousand did so in 1963. The figure is expected to be more in the current year. Such large scale movement naturally brings with it certain problems and difficulties. For example, available transport facilities for people wanting to travel to India were very much short of demand. To solve this problem, the Government of India are making arrangements to ply three vessels between Rangoon and Madras during the middle of this year. Airlines services between Rangoon and Calcutta are also being increased. Fares will be substantially reduced in the case of those who cannot afford to pay the full fare. In indigent cases, free passages will also be given.

Many Indians have to stay on in Burma in order to obtain the travel documents necessary for their journey, even though they have no income or saving on which to live. Although they are coming away for good from Burma, they are finding it increasingly difficult to bring with them their hard earned savings. All these factors cause genuine hardships.

The Government of India are fully alive to the seriousness of this problem. Customs formalities for those coming from Burma have been liberalized; measures will be undertaken for the rehabilitation of those who stand in need of it. The Indian Embassy in Rangoon is in touch with the Revolutionary Government of Burma in seeking relief for the affected Indians.

SHRI J. S. PILLAI: I wish to know from the hon. Minister the number of Indians who have taken up Burmese citizenship. What is their number?

SHRI DINESH SINGH: I am afraid I cannot give that figure offhand. I do not have it, but that information has been given to the House several times before.

SHRI J. S. PILLAI: It has been stated in the Statement given with the answer that about 50,000 Indians have been affected by this nationalisation, also that ships are plying between Rangoon and Madras to clear the crowd of people coming. Is it a fact that most of these people affected are South Indians and Tamilians?

AN. HON. MEMBER: They are all Indians.

SHRI J. S. PILLAI: Yes, and they are Tamilians, and the ships ply between Rangoon and Madras.

SHRI DINESH SINGH: That is the most convenient port, Sir.

श्री ए० बी० वाजपेयी: क्या यह सच है कि बर्मा सरकार ने १० अप्रैल को एक आदेश जारी किया था जिसके अनुसार जो भारतीय पहले ३०० रु० और सोना अपने साथ ला सकते थे उन्हें अब इस बात से रोक दिया गया है । एक महिला जो नाक में नथनी पहिने हुए थी उसकी नथनी को रंगून के हवाई अड्डे में उतार लिया गया और उसके नाक से खून निकलने लगा और वह खून डमडम हवाई अड्डे तक बहता रहा ?

श्री जवाहरलाल नेहरू : ऐसी खबर मैंने अखबार में पढ़ी थी कि नाक से निकाल ली गई है; कस्टम वालों ने नहीं निकाली बल्कि उस महिला ने खुद निकाली । यह बात सही है कि उस महिला से वे कस्टम मांग रहे थे इसलिए उसे मजबूरन देना पड़ा । अखबार में मैंने यह बात पढ़ी, कोई इत्तिला हमारे पास नहीं आई है ।

श्री ए० बी० वाजपेयी : मैंने एक सवाल यह पूछा था कि १० अप्रैल को बर्मा सरकार ने एक हुक्म जारी किया कि भारतीय अपने

साथ जो ३०० रु० ला सकते थे वह अब नहीं ला सकते हैं ।

श्री जवाहरलाल नेहरू : ऐसा कोई कानून हमें मालूम नहीं है ।

SHRI ARJUN ARORA: May I know if it is a fact that there is no Indian Ambassador in Burma and that fact is causing a great deal of inconvenience and hardship to the Indian citizens, and also whether it is a fact that this particular post has been vacant because somebody whom the Government of India want to send there does not want to go there?

SHRI JAWAHARLAL NEHRU: No, Sir. The Embassy's work is going on there. It is unfortunate that the Ambassador is not there at present. The new Ambassador we have chosen will go soon. Nobody has refused to go there.

SHRI NIRANJAN SINGH: May I know, Sir, whether the Government is aware that permits were not available to the persons who wanted to come to India, though the Embassy is doing its best, and whether the Government has now taken up the matter on a govermental level?

श्री विमलकुमार मन्नालालजी चौरड़िया : जैसा कि स्टेटमेन्ट में बतलाया गया है कि वहां पर नेशनलाइजेशन हुआ और उसकी वजह से वहां की सरकार ने कम्पेनसेशन देना स्वीकार किया लेकिन इसके बावजूद भी भारतीय नागरिकों को भयंकर कष्ट हुए । सरकार कहती है कि इसकी जानकारी हमें है तो क्या कारण है कि लगभग ६ महीने से वहां पर हमारा राजदूत नहीं भेजा गया ? यह तो पहली बात है । और दूसरी बात यह है कि आप यह कहते हैं कि हवाई जहाजों की सर्विस बढ़ाई जाने वाली है, पानी के जहाजों की सर्विस बढ़ाई जाने वाली है । तो मैं यह जानना चाहता हूं कि कौन-कौन सी तारीखों से ये सर्विसेज़ बढ़ाई जाने वाली हैं ?

श्री दिनेश सिंह : हवाई जहाजों की तादाद बढ़ाई जा रही है और पानी के जहाजों की तादाद भी बढ़ाई जा रही है । जहां तक पहले सवाल का सम्बन्ध है उसके बारे में अभी प्रधान मंत्री जी ने कहा कि हमारा दूतावास वहां पर काम कर रहा है ।

श्री विमलकुमार मन्नालालजी चौरड़िया : हमारा दूतावास वहां पर काम कर रहा है फिर भी भारतीयों को इतने भयंकर कष्ट हो रहे हैं । सर्जन का काम कम्पाउन्डर करे तो इस तरह से हमारा काम चलने वाला नहीं है और अब तक एक जिम्मेदार राजदूत को वहां पर क्यों नहीं भेजा गया ? क्या आप वहां पर कोई राजदूत भेजना नहीं चाहते हैं, कोई जाना नहीं चाहता है या फिर आप बाहर से किसी को इम्पोर्ट करेंगे तब भेजेंगे ?

श्री सभापति : इसका जवाब तो दे दिया गया है ।

श्री ए० बी० वाजपेयी : २१ तारीख को सवाल किया गया कि वहां पर राजदूत क्यों नहीं भेजा गया है तो जवाब दिया गया कि भेजा जा रहा है । और अब २८ तारीख को फिर सवाल किया गया कि कब तक वहां पर राजदूत जाने वाला है तो जवाब दिया गया कि जल्दी जाने वाला है । मैं यह पूछना चाहता हूं कि क्या गवर्नमेंट के काम करने का यही तरीका है ?

श्री जवाहरलाल नेहरू : यही तरीका है । कोई चुटपुट में राजदूत नहीं निकाला जा सकता है, यह कोई जगलरी बाक्स नहीं है ।

श्री ए० बी० वाजपेयी : अगर ६ महीने तक यह सरकार राजदूत नहीं निकाल सकती है तो उसको इस्तीफा दे देना चाहिये ।

श्री सभापति : इसका जवाब दिया जा चुका है ।

श्री विमलकुमार मन्नालालजी चौरड़िया : मैं यह जानना चाहता हूं कि ६ महीने का अरसा हो गया और क्या अब तक सरकार वहां पर राजदूत भेजने के बारे में सोच ही रही है ।.राजदूत न होने की वजह से वहां पर भारतीयों की दुर्दशा हो रही है । मैं पूछना चाहता हूं कि अब तक राजदूत क्यों नहीं मिल पाया ?

श्री सभापति इसका जवाब दिया जा चुका है ।

SHRI A. B. VAJPAYEE: The reply is not going to satisfy this House.

श्री विमलकुमार मन्नालालजी चौरड़िया : माननीय मंत्री जी ने कहा कि हम जल्दी भेजेंगे ।

श्री सभापति : यह बात अलग है कि आप सवाल के उत्तर से सैटिस्फाई हुए हों या नहीं, लेकिन आप को जवाब दे दिया गया है । अगर आप इस बारे में कोई और बात मालूम करना चाहते हैं तो पूछ सकते हैं ।

श्री विमलकुमार मन्नालालजी चौरड़िया : इसलिए मैं यह पूछना चाहता हूं कि भविष्य में वहां पर कोई राजदूत भेजा जायेगा या नहीं और अब तक क्यों नहीं भेजा गया ? I want to know this answer only.

श्री जवाहरलाल नेहरू : कुछ दिक्कतें पेश आई हैं । एक आदमी वहां नहीं जाना चाहते हैं और दूसरे की तलाश है । इस तरह से वहां राजदूत भेजने में देर हो गई है । इस अरसे में वहां पर काम के लिए अच्छा इन्तजाम किया गया है और वहां पर ऊंचे दर्जे के लोग हैं जो काम कर रहे हैं । मेरा ख्याल है इससे कोई खास नुकसान नहीं हुआ है ।

श्री विमलकुमार मन्नालालजी चौरड़िया : मैं यह जानना चाहता हूं कि यह जो आपकी इम्बैसी सारा काम कर रही थी, उसके बावजूद रंगून के हवाई अड्डे पर एक महिला की नाक को काट कर उसका ज़ेवर उतार लिया गया और उसकी ऐसी दुर्दशा हुई, तो इसके रोकने के लिये आपकी इम्बैसी ने क्या किया और आपको क्या इन्फार्मेशन दी इसके बारे में कि फिर ऐसी घटनायें न हों, इसके लिये वह क्या प्रयत्न कर रही है ?

श्री जवाहरलाल नेहरू : इम्बैसी इसमें क्या दखल देती सिवाय इसके कि कुछ शिकायत करे बाद में, मेरी समझ में नहीं आता ।

شری پیارے لال کریل "طالب" : بھارتیہ سرکار نے کوئی پروٹسٹ کیا ہے اس سلسلہ میں ?

†[**श्री प्यारेलाल कुरील "तालिब"** : भारतीय सरकार ने कोई प्रोटेस्ट किया है इस सम्बन्ध में ?]

श्री जवाहरलाल नेहरू : अखबार में एक चीज़ निकली है कि क्या वहां हुआ । भारतीय स्त्री ने खुद अपनी नथनी को निकाला, जिसमें उसको कुछ चोट लग गई होगी ।

شری اے - ایم - طاری : میں وزیر اعظم سے یہ جاننا چاہتا ہوں کہ جو ہندستانی وہاں سے بھاگ کر آرہے ہیں ان کے بارے میں نائب وزیر نے ابھی یہ کہا کہ برما سرکار ان کو کمپنسیشن دیگی جو ہندوستان اپنی جائیداد چھوڑ کر وہاں سے بھاگ کر آ رہے ہیں - تو کیا انڈین ایمبسی ان کی ملکیت کی کوئی فہرست بنا رہی ہے ؟ دیکھتی ہے کہ وہ کتنی جائیداد چھوڑ کر آ رہے ہیں تاکہ ان

†[ ] Hindi transliteration.

کو اس کے مطابق کمپنسیشن دیا جائے ۔

†[श्री ए० एम० तारिक : मैं वज़ीरे आजम से यह जानना चाहता हूं कि जो हिन्दुस्तानी वहां से भाग कर के आ रहे हैं उनके बारे में नायब वज़ीर ने अभी यह कहा कि बरमा सरकार उनको कम्पेन्सेशन देगी जो हिन्दुस्तानी अपनी जायदाद छोड़ कर वहां से भाग कर आ रहे हैं । तो क्या इंडियन इम्बैसी उनकी मिल्कियत की कोई फेहरिस्त बना रही है और यह देखती है कि वह कितनी जायदाद छोड़ कर आ रहे हैं ताकि उनको उसके मुताबिक कम्पेन्सेशन दिया जाये ?]

श्री दिनेश सिंह : जो वहां इसकी सूचना देते हैं उनके बारे में ज़रूर लिख लिया जाता है और कोशिश की जाती है पता लगाने की ।

SHRI S. S. MARISWAMY: Sir, may I know whether the refugees, who are coming from Burma will be treated on the same footing as those coming from East Pakistan and also whether any financial help will be given to them to start their life afresh?

SHRI DINESH SINGH: The State Governments have some plans in this connection.

SHRI JAWAHARLAL NEHRU: May I add, Sir, that the rules that the Burma Government have made are not against the Indians only but against all foreigners.

SHRI G. RAMACHANDRAN: This particular incident and other incidents of this kind—do they indicate that the relations between our country and Burma are somewhat strained?

SHRI JAWAHARLAL NEHRU: No, because these rules apply to all foreigners. They are not intended only against Indians.

†[ ] Hindi transliteration.

SHRI S. S. MARISWAMY: They have to start their life afresh here. They are coming as beggars . . .

MR. CHAIRMAN: I think you have had enough. I must pass on to the next question.

*130. (*The questioner (Shri Sitaram Jaipuria) was absent. For answer,* vide *col.* 894 infra.)

DOCUMENTARY FILMS

*131. SHRI BIREN ROY: Will the Minister of INFORMATION AND BROADCASTING be pleased to state.

(a) whether there is any advisory committee to advise on production and release of documentary films;

(b) if so, the names of the members thereof; and

(c) whether film documentaries are censored?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF INFORMATION AND BROADCASTING (SHRI SHAM NATH): (a) There is an Advisory Committee of film producers, attached to the Films Division for the purpose of co-ordinating the efforts of private producers and the Films Division for the production of films on subjects having a bearing on the national emergency.

(b) A statement giving the names of the members of this Committee is placed on the Table of the House.

(c) Yes, Sir.

STATEMENT

Names of Members of the Advisory Committee of film producers for co-ordinating the efforts of private producers towards the production of films on subjects having a bearing on the national emergency with that of the Films Division:—

1. The President, Film Federation of India—*Chairman.*